कुछ योजनाओं में नीतिगत स्तर पर एवं अधिकारी मौजूद रहे।

परिवार में मिले संस्कारों से निकली भाषा ही मातृभाषा : डा. सुधा

तकनीकी विश्व विद्यालय में मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस

उत्तर उजाला ब्यूरो

देहरादून। भाषा वह सूत्र है जो सभी को एकजुट करती है। इस एकता को और मजबूत बनाने के लिए हर साल 21 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस मनाया जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए शुक्रवार को वीर माधो सिंह भण्डारी उत्तराखण्ड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (यूटीयू) के प्रांगण में भी अन्तर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाषा जो कि मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान दूसरे व्यक्ति से करता हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुए डा.सुधा रानी पाण्डे पूर्व कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय छात्र-छात्राओं, शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शब्द रूपी ज्योति ही इस संसार को प्रकाशित करती है। परिवार में मिले संस्कारों से निकली भाषा ही मातृ भाषा है। उन्होंने कहा कि वाणी एक कामधेनु की भांति है। भाषा ही समाज के सांस्कृतिक, बौद्धिक विकास का रोडमैप तैयार करती है चाहे वह तकनीकी भाषा हो, वैज्ञानिक भाषा हो या सांस्कृतिक भाषा, संसार को प्रकाशित करने का काम करती है। उन्होंने कहा कि कलम के अस्तित्व को भी बचाये रखनी जरूरत है हालांकि मशीन के प्रयोग मात्र से विकास भी सम्भव नहीं है अपितु मनुष्यता को बचाने के लिए भाषा और संस्कृति को भी बचाना जरूरी है। इसी वजह से यूनेस्को द्वारा 21 फरवरी को इस विशेष दिन के रूप में मनाने की परम्परा शुरू की गई जिसे यूनेस्को द्वारा आधिकारिक मान्यता मिली है। इस अवसर पर डा.राम विनय सिंह ने भी छात्रों को अपने उद्बोधन में कहा कि मातृ भाषा को बचाने के लिए हमें अपने संस्कारों को भी बचाना होगा। उन्होंने कहा कि बच्चे का पालन-पोषण मां के साथ रख कर जिस भाषा में होता है और वह बात करना सीखता है वही उसकी मातृ भाषा होती है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.ओंकार सिंह ने भी छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाषाएं न केवल संवाद का माध्यम होती है, बल्कि संस्कृति और सभ्यता का भी आइना होती है। भले ही दुनिया में विभिन्न जातियों, धर्मों सम्प्रदायों ओर स्थानों पर अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हों लेकिन इन सब के बावजूद भी भाषा ही वह सूत्र है जो मानव सभ्यता को एकता के साथ जोड़े रखती है। कुलपति द्वारा छात्रों को सशक्त संवाद क्षमता पैदा करने हेतु मातृ भाषा हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों मं प्रवीणता पैदा करने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गयी और भाषा पर आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंजू काला द्वारा भी पहाड़ की भाषा व संस्कृति को बचाये रखने पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डा. विनय कुमार पटेल, प्रो.मनोज कुमार पाण्डा निदेशक महिला प्रौद्योगिकी संस्थान, नवोदित प्रवाह पत्रिका के सम्पादक रजनीश त्रिवेदी, डा. विशाल रमोला कोर्डिनेटर फैकल्टी ऑफ टैक्नोलॉजी, कोनिका मुखर्जी सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।